अध्याय तैंतीसवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥

"हे परम दयालु सिद्धारूढ़जी, आप ने शांतिपूर्ण वैराग्य धारण किया हुआ है और आप भवभय का हरण करते हैं; आप के मन में व्दैत का हमेशा ही अभाव है तथा आप इस संसार से पार होने का वरदान देने वाले हैं। हमारे दोषों का निवारण कीजिए अथवा दोषों को भूलकर हमारे जैसे दासों की पीड़ा तथा दुख पर ध्यान दीजिए। हे दयासागर, आप भक्तों के सारे संकटों का हरण करने वाले हैं।"

हे सिद्धारूढ़ यतिवर्य, आप भक्तों के प्रति उदार होते हुए दीन जनों का पालन करने वाले कृपासागर हैं; इस जगत का उद्धार करने वाले आप को मैं प्रणाम करता हूँ। यह जगत आप के शासन से चलता है; हमारे जैसे अज्ञानी लोग आप की महिमा समझ नहीं पाते हैं, इसीलिए आप ही की शक्ति का आधार लेकर हम आप की जीवनी बयान कर रहे हैं। अगर आप प्रसन्न हो, तो मेरी यह साधारण बुद्धि भी श्रेष्ठ होकर आप की जीवनी कुशलता पूर्वक बयान करने की प्रेरणा मुझे निश्चित ही मिलेगी। आप की अगाध जीवनी का बयान करने के लिए शुद्ध प्रेम की आवश्यकता है, जिससे विस्तार पूर्वक तथा स्पष्ट रूप से कहानी का बयान कर सकते हैं और आप की जीवनी सुनने से प्रेम तथा आनंद उमड़ पड़ते हैं। जिस प्रकार अनगिनत तारकाओं में चंद्ररेखा शोभा देती है, उसी प्रकार अनेक संतों की कहानियों में आप की लीलाएँ विशेष रूप से ध्यान में रहती हैं। संत जनों में आप शोभा देते हैं, इसीलिए फिलहाल मैं संत कथा बयान कर रहा हूँ। श्रीसिद्धारूढ़जी ने स्वयं संतों की महिमा बयान करने की आज्ञा की हैं और मुझे भी उसमें रुचि होने के कारण, मैंने भली-भाँति संत कथा बयान करना आरंभ किया है। सतगुरुजी ने कहा, "गरग गाँव के महात्मा श्री मडिवाल स्वामीजी की जीवनी मैं सुनना चाहता हूँ, इसलिए अब तुम मुझे उनकी जीवनी सुनाओ।"

सतगुरुजी की आज्ञा शिरोधार्य मानकर, मैं उन दिनों की घटनाओं को स्मरण करके उनका बयान करने लगा, जब सतगुरुजी ऐन जवानी में हुबली आकर रहने लगे थे। पहले कर्नाटक राज्य में कित्तूर नाम की वन तथा उपवनों

से सजी एक मनोहर रियासत थी। वहाँ सभी वेदशास्त्रों में निपुण एक महात्मा रहता था। एक दिन उसके पास मडिवालप्पा नाम का एक ब्रह्मचारी आया। अत्यंत विद्याभ्यासी होने के कारण सिखायी हुई विद्याएँ तुरंत पढ़कर उसने सारे शास्त्र गुरु कृपा से कंठस्थ कर लिए। एकबार जब गुरुजी किसी दूसरे गाँव गये थे तब उस रियासत की दो राजकन्याएँ मठ आयी और उन्होंने मडिवाल को वहाँ अकेला ही पाया। उसके मन की प्रवृत्तियों की परीक्षा करने हेतु वे विविध प्रकार की प्रेमलीलाएँ करने लगी, फिर भी वह विचलिए नहीं हुआ; क्योंकि उसने कामवासना पर जय प्राप्त की थी। उसका वैराग्य कठोर होने के कारण उनके चेहरे की ओर देखे बगैर तथा एक शब्द भी बोले बगैर वह अपनी पढ़ाई में मग्न रहा। आश्चर्य से दंग हुई दोनो राजकन्याएँ राजमहल वापस लौट गयी; क्रोधित हुए मडिवाल ने कहा, "इन जवान लडकियों ने मुझे बिना वजह सताया है, इसलिए यह गाँव छोड़ना ही बेहतर होगा। जब मैं फिर से इस गाँव लौटूंगा तब तक यह गाँव पूर्ण रूप से नष्ट हुआ होगा।" ऐसा कहकर वह निकल पड़ा। आश्रम का त्याग करते समय उसने पहनी हुई धोती फाड़कर फेंक दी और वह उत्तर हिंदुस्तान की ओर निकल पड़ा।

वस्त्रविरहित अवस्था में मार्ग से जाने वाले उस नौजवान के चेहरे पर फैली प्रभा देखकर लोग आश्चर्य से कहते थे की ज्ञान प्राप्ति के कारण यह सूर्य के समान तेजस्वी दिख रहा है। काशी क्षेत्र पहुँचकर उसने अनेक पंडितों को वाद विवादों में पराजित किया; उसकी कीर्ति चारो ओर फैल गयी और उसे बहुत सम्मान मिला। उसके पश्चात मडिवाल स्वामीजी ने काशी के विश्वनाथजी (श्रीशिवजी) के दर्शन किए और वही बैठकर वह सोचने लगे। मैं पूर्ण रूप से विरक्त था इसीलिए सभी विषयोपभोगों का त्याग करके यहाँ आया, परंतु यहाँ सभी पंडितों पर जय पाकर, मैंने यह कैसी मूर्खता की? वाद विवाद में हार जाने के कारण उनका अपमान हुआ और मैंने बहुत सम्मान प्राप्त किया, इसके कारण वे सभी अत्यंत दुखी और उदास हो गये होंगे। भले ही इंद्रियजनित सुखों का त्याग किया हो, परंतु मानसम्मान प्राप्त करने की आसक्ति के कारण मैं पूरी तरह से लुट गया; अविचार तथा अभिमान इन दोनों ने मुझे पूरी तरह से निगल लिया। पंडितों को वादविवादों में हराकर मुझे ब्रह्मराक्षस होना पड़ेगा; इस का अर्थ यह

हुआ की मैंने प्राप्त किया हुआ वैराग्य व्यर्थ हुआ, क्योंकी ब्रह्म क्या होता है यह समझ लेने की मैंने कामना ही नहीं की। मैं परमार्थी नहीं बन सका; मान और सम्मान के लिए यह जन्म मैंने व्यर्थ ही गँवाया। आज से मेरे मुख से संस्कृत भाषा कभी भी बोली नहीं जानी चाहिए। इस प्रकार सोचकर उसने प्राप्त किए हुए सभी अलंकार, सोना और पैसे गरीबों में बाँट दिए। वहाँ से वे हिमालय गए और वहाँ एकांत में बैठकर उन्होंने अनेक दिन दृढ़ता से तप किया। कुछ समय के पश्चात उनका मन शांत हुआ तथा मन को निर्गुण ईश्वर में लीन करने से वे ब्रह्मस्थिति में स्थिर हो गए। इस प्रकार आत्मज्ञान प्राप्त करने के पश्चात हिमालय छोड़कर कित्तूर गाँव लौटने पर उन्होंने देखा तो सारा गाँव ध्वस्त हो गया था। शत्रू राजमहल पर हमला करके राजपरिवार की महिलाओं समेत सब कुछ लूटाकर ले गया हुआ देखकर उन्हें अत्यंत दुख हुआ। जिस स्थान पर किसी महात्मा को सताया जाता है, वह जगह शापग्रस्त हो जाती है; और फिर कोई महात्मा आकर उस स्थान की रक्षा करने तक वह स्थान उसी स्थिति में रहता है। अस्तु। मडिवाल स्वामीजी गरग गाँव जाकर रहने लगे; उनकी ज्ञानसंपन्न स्थिति देखकर भक्तगण प्रतिदिन उनके दर्शन के लिए आने लगे। सभी भक्तों ने मिलकर नाले के किनारे एक मनोहर स्थान देखकर वहीं उनके लिए एक मठ की स्थापना की; उस मठ में वे रहने लगे। कुछ विरक्त शिष्य उनकी सेवा के लिए मठ में रहते थे। किसी कारण से मडिवाल स्वामीजी दृष्टिहीन हो गए। ठीक उसी समय सिद्धारूढ़ स्वामीजी भक्तों के लिए हुबली में आकर रहने लगे थे और उन्होंने बहुत लोगों से मडिवाल स्वामीजी की महानता सुनी।

एकबार सिद्धारूढ़जी कुछ भक्तों के साथ मडिवालप्पाजी के दर्शन के लिए गरग गाँव पधारे। भक्तों ने उनके दर्शन करने के पश्चात मडिवालप्पाजी ने उन्हें पूछा की वे कहाँ से पधारे हैं। तब साथ आए भक्तों ने कहा की वे हुबली से आए हैं। उसपर स्वामीजी ने कहा, "मैंने सुना है की तुम्हारे गाँव शिवयोगी पधारे हैं।" तब हुबली के भक्तों ने कहा की वे स्वामीजी को अपने साथ ले आये हैं। मडिवाल स्वामीजी ने कहा, "हे साधो, आप का शुभनाम मुझे बताईए।" सिद्धजी ने कहा, "लोग मुझे 'आरूढ़' कहते हैं।" तब मडिवाल स्वामीजी ने कहा, "अपना

नाम 'आरूढ़' बता रहे हैं; क्या आप ने बादलों में जन्म लिया था? माँ की कोख से ही जन्म लिया था, है न? तो फिर माताजी ने दिया हुआ नाम बताईए।" उसपर सिद्धजी ने कहा, "सच कहूँ, तो मैं माया का आवरण लेकर ब्रह्म से ही पैदा हुआ हूँ; इसलिए मैं गर्भ से जन्मा हुआ हूँ यह झूठ है।" उसके पश्चात मडिवाल स्वामीजी ने सिद्धारूढ़जी को अपने समीप बुलाया और उनके सारे शरीर पर प्रेम से हाथ फेरा। तब उनको ज्ञात हुआ की सिद्धजी बहुत ही कृश हैं। वे मन ही मन बोले की सचमुच ही इसने कठोर नियमन से अपना शरीर घिसा है; उसी प्रकार अपना मन भी शमित किया है, अर्थात्, उसके बगैर ज्ञान प्राप्ति संभव नहीं है। उन्होंने सिद्धजी से पूछा, "क्या आप ने इस जगत में ऐसा नगर देखा हैं, जहाँ सर्वत्र बंदर खेलते रहते हैं?" सिद्धजी ने मन ही मन सोचा की यह मनुष्य का शरीर ही वह नगर हो सकता है। अत्यंत चंचल होने वाले मनुष्य के मन की वृत्तियाँ रूपी (मन, मधुकर, मेघ, मानिनी (स्त्री), मदन, मरुत् (पवन), मा (लक्ष्मी), मद, मर्कट तथा मत्स्य ये दस 'म'कार अत्यंत चंचल होते हैं।) बंदर हमेशा खेलते रहते हैं। सिद्धजी ने कहा, "मैंने एक ऐसा गाँव देखा है, जहाँ कुत्ते अनर्गल घूमते फिरते हैं तथा अन्य कोई भी उस गाँव में नहीं रहता है।" मडिवाल स्वामीजी ने उस समय पूछा, "इतने सारे कुत्तों को कौन खिलाता है?" सिद्धजी ने कहा, "नजदीक के अन्य गाँव वाले उन्हें खिलाते है। उन गाँवों में जो जानवर मरते हैं, उन मृत जानवरों को कुत्तों के गाँव में फेंक दिया जाता हैं; यह समझ लीजिए की उन जानवरों का मांस खाकर वे कुत्ते जिंदा रहते हैं। आवारा कुत्तों से भरा हुआ गाँव यानी मनुष्य के मन की वृत्तियाँ। पंचतत्वों को अन्य गाँव समझ लीजिए, निर्जीव विषयोपभोग रूपी जानवर ही कुत्तों को खिलाते हैं, जो खाकर वे कुत्ते जीते हैं।" इस प्रकार का चतुर भाषण सुनकर उन्होंने सिद्धजी का इरादा समझ लिया, उसपर मडिवालप्पाजी ने उन्हें पूछा, "क्या आप ने ऐसा घर देखा है, जिसके रसोईघर में तीन नदियाँ मिलती हैं और जिन नदियों का जल लेकर रसोई बनाई जाती है? उस रसोईघर से बाहर आने के लिए तीन कोस दूर तक चलना पड़ता है, यतिवर्य, क्या आप ने ऐसा घर देखा हैं?" सिद्धजी ने कहा, "ऐसा शरीर रूपी घर मैंने देखा है। जहाँ तिकडी (यानी मनुष्य का शरीर, जो स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर तथा कारण शरीर इन

त्रयी से बना रहता है) रसोईघर होकर तीन नाडियों (इडा, पिंगला तथा सुषुम्ना) के रूप में नदियाँ मिलती हैं और जहाँ 'समाधि' रूपी भोजन बनता है। समाधि की स्थिति से बाहर आने के लिए, सुषुप्ति (गाढ़ निद्रा), सुषुप्ति से सपना (स्वप्नावस्था यानी सपना देखना) और सपने से जागृति (जागृतावस्था यानी जगना) इन तीन अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है यानी तीन कोस चलना पड़ता है।" सिद्धजी की बात सुनकर मडिवालप्पा अत्यंत हर्षित हुए। हुबली के भक्तों को उन्होंने कहा, "आप के अच्छे नसीब के कारण ही आप लोगों को इनकी संगति प्राप्त हुई है। आप सचमुच ही धन्य हैं। अब आप लोग इन की अनन्य होकर भक्ति कीजिए।" उसके पश्चात स्वामीजी ने कहा, "जो मैं कहता हूँ उसे ध्यान से सुनिए। मुख (मुख से बोले जाने वाले शब्द), हाथ (हाथों से होने वाले कर्म) और शिश्न (विषयोपभोग की वासना) इन तीनों को नियंत्रित कीजिए; क्योंकि अगर हुबली के भक्तगण सिर चढ़ाएँगे तो हो सकता है की वे ऊपर उठाकर नीचे भी फेंक देंगे।" सिद्धजी ने कहा, "आप की कृपा से सभी विषयोपभोगों का त्याग कब का कर चुका हूँ, इसलिए अब उन से कोई भय नहीं रहा।" मडिवाल स्वामीजी ने सिद्धजी से कहा, "आप को भक्तगण वस्त्र तथा धन देंगे, उन्हे आप लीजिए, परंतु दूसरों को न देकर हमारे पास उन्हे भेज दीजिए।" सिद्धजी ने कहा, "मैं पूरी तरह से जानता हूँ की आप पूर्णत: विरक्त हैं। अगर आप सचमुच ही लोगों से धन स्वीकार करते होंगे, तो फिलहाल आप के पास जो धन है, वह मुझे दीजिए। मैं बड़ा व्यापार करके बहुत सारा धन इकट्ठा करके सभी धन आप को ला दूँगा।" सिद्धजी ने किया हुआ चतुर संभाषण सुनकर मडिवाल स्वामीजी ने उन्हें हर्षित होकर गले लगाया और कहा, "आज मुझे मेरा भाई मिला।" इन दोनों के संभाषण में उपर्युक्त वस्त्र और धन यानी ब्रह्मप्राप्ति की अनुभूति ऐसा श्रोतागण समझें। जो ब्रह्मप्राप्ति के अधिकारी नहीं हैं उन्हें वह अनुभूति नहीं देनी चाहिए तथा उसे गुरुचरणों में ही सँभालकर रखनी चाहिए यही स्वामीजी सिद्धारूढ़जी से कहना चाहते थे। सिद्धजी ने कहा, "आप की अनुभूति ही आप मुझे दीजिए। मैं उसपर चिंतन करके उसे बढ़ाऊँगा और फिर से लाकर उसे आप ही को अर्पण करुँगा।" उसी पल बाहर शोरगुल मचा हुआ सुनाई देने के कारण स्वामीजी ने एक भक्त को किस लिए शोर मचा है यह

पूछकर आने के लिए कहा। उस भक्त ने बाहर जाकर देखा तो एक मनुष्य की साँप के काटने से मृत्यु हुई थी और उसकी पत्नी तथा बच्चे रो रहे थे; ये सब देखने के लिए वहाँ भीड़ इकट्ठा हुई थी। उस भक्त ने स्वामीजी को यह वार्ता सुनाते ही उन्होंने उसे कहा, "इस सिद्धारूढ़जी का चरणामृत लेकर उसके शरीर को लगाईए तथा थोड़ा उसके मुख में भी डालिए और सभी लोग मिलकर भजन करते रहिए, ताकि वह निश्चित ही जीवित हो उठेगा।" उसके पश्चात उन्होंने सिद्धजी को एक आसन पर बिठाकर बड़े प्रेम से उनके चरण धोंए और वही चरणामृत उस मृत मनुष्य के मुख में डाल दिया तथा उसके पूरे शरीर पर लगा दिया; वह मृत शरीर सफेद वस्त्र से ढाँक दिया और उसके चारो ओर बैठकर सभी भजन करने लगे| एक घटिका भजन करने के पश्चात अचानक वह शव हिलने लगा। थोड़ी देर में वह मृत मनुष्य जीवित होकर उठकर बैठा, जिससे सभी अत्यंत आनंदित हो गये। उसकी पत्नी आगे बढ़ी और दोनों महात्माओं के चरणों पर सिर रखकर मानो उसने अपनी आँखों के आँसूओं से उनके चरण धो डाले और हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी। उसने कहा, "हे दीनबन्धु, आप दोनों की जयजयकार हो। आप दोनों जैसे शिव तथा विष्णुजी के रूप ही हैं| मुझ जैसे अनाथ महिला को पतिदान देकर आप ने मुझे सनाथ किया है।" थोड़ी शक्ति प्राप्त होने के पश्चात वह मनुष्य उठा और उसने दोनों को प्रणाम किया और कहा, "मैंने मेरा तन, मन तथा धन आप को अर्पण किया है," मडिवाल स्वामीजी ने उसे कहा, "तुम्हारा धन तुम्हे लौटाता हूँ, तुम्हारा मन तुम आत्मविद्या पर लगा देना, वह हमें पूर्ण रूप से चाहिए। तुम्हारा शरीर दोनों जगहों पर कार्यरत रहें, यानी एक ओर तुम पत्नी तथा बच्चों को सँभालने का कार्य करो और बाकी समय में तुम निष्काम मन से महात्माओं की सेवा में लग जाओ।" उनका अमृततुल्य भाषण सुनकर भक्तगणों ने दोनों महात्माओं की जयजयकार की, उनकी आरती उतारी, उस समय ऐसे लग रहा था की सारा त्रिभुवन उस जयजयकार से गूँज उठा है। सिद्ध कुछ दिनों के लिए वहाँ रहे और उस समय उन्होंने 'योगवासिष्ठ' ग्रंथ पर प्रवचन किया; उस समय दूर दूर के गाँवों से लोग सिद्धजी को देखने के लिए वहाँ इकट्ठा हुए थे।

उनके मुख से निकला तथा अमृत से भी अधिक मधुर वेदांत पर प्रवचन

सुनने के लिए वहाँ अनेक शास्त्री तथा पंडित आये थे। जहाँ दो नदियों का संगम होता है, वह तीर्थ पवित्र समझा जाता है; जिस प्रकार गंगा और यमुना के संगम के कारण प्रयाग तीर्थ पवित्र माना जाता है, उसी प्रकार दो ब्रह्मज्ञानी व्यक्तियों का संगम होने के कारण मुमुक्षुओं के लिए गरग गाँव मानो एक परम पवित्र और श्रेष्ठ तीर्थ हो गया था। सिद्धारूढ़जी का वेदांत पर प्रवचन सुनकर स्वामीजी हर पल आनंद से झूम रहे थे। एकबार सिद्धजी जब जीवनमुक्ति के अध्याय का विवरण करने लगे तब अचानक स्वामीजी ने उनसे बीच में ही 'ठहर जा' कहा| उसपर मडिवाल स्वामीजी ने कहा, "बर्तन में रखा उत्तम पकवान एकबार पेट में जाने के पश्चात, उसकी रुचि कोई भी नहीं जान सकता, परंतु वही पकवान जीभ पर हो, तो तभी उसकी रुचि जानी जा सकती है। उसी प्रकार जीवशिव की एकरूपता होने के पश्चात जिस आनंद की अनुभूति होती है, वही अनुभूति अज्ञान की स्थिति में बिलकुल नहीं होती, उसी प्रकार शरीर पर होने वाली आसक्ति पूर्ण रूप से नष्ट होकर मोक्षप्राप्ति होने के पश्चात, शुद्धता की प्राप्ति के बगैर आनंद होता ही नहीं (क्योंकि यह स्थिति दुख तथा आनंद इन स्थितियों से परे है)। परंतु जीवन्मुक्त अवस्था में (जो सांसारिक बंधनों से पूर्ण रूप से मुक्त हुआ हो उसे जीवन्मुक्त कहते है) इस आनंद की अनुभूति होती है; इसीलिए इस मँझली अवस्था में ब्रह्मानंद की अनुभूति करनी चाहिए। इसीलिए, जो सद्भक्त होते हैं वे भगवान से मोक्षपद की मनोकामना नहीं करते, बल्कि उससे केवल भक्ति की मनोकामना करते हैं, जिससे उन्हें ब्रह्मानंद के सुख की अनुभूति हमेशा हो सकती है।" मडिवाल स्वामीजी की बाते सुनकर सभी हर्षित हो गए। उसके पश्चात भक्तों ने दोनों की पूजा की और उनके नाम की जयजयकार की। कुछ दिनों के लिए सिद्धजी वही रहे, उन दिनों में सभी भक्तगणों को लग रहा था की मानो आनंद का समारोह ही मनाया जा रहा हो। जब वापस हुबली जाने से पहले विदा लेने के लिए सिद्धजी स्वामीजी के पास गये तब स्वामीजी ने कहा, "सिद्धारूढ़जी, अब आप अपनी घुमक्कडी बस कीजिए। अब फिर हुबली छोड़कर कहीं भी मत जाईए। हुबली का वैभव अब अवर्णनीय हो गया है। अब आप को एक बात कहता हूँ, उसे ध्यान में रखिए। कहीं भी स्त्रीमुख मत देखिए; इस स्त्री ने ही अनेक ऋषिमुनियों की तपस्या भंग

की है; इसलिए इस विषय में आप अपना मन शुद्ध रखिए।" ऐसा कहकर मडिवाल स्वामीजी ने दोनों हाथों से सिद्धजी को गले लगाया और वे सिसकने लगे। उनकी दोनों आँखों से अविरत अश्रुधाराएँ बह रही थी। वह प्रेमावेग अवर्णनीय था। बहुत समय तक अपने पुत्र से अलग रही माता को फिर से पुत्र की भेंट होने पर जो प्रेमावेग प्रकट होता है, वही प्रेमावेग वहाँ दिखाई पड़ रहा था। जिनका वैराग्य अत्यंत कठोर था, ऐसे मडिवाल स्वामीजी, विदा लेकर जाने वाले सिद्धारूढ़जी को देखकर रो रहे थे; दोनों की आँखों से आँसू झर रहे थे। उसके पश्चात स्वामीजी ने कहा, "मेरे प्रिय सिद्धजी, मुझे कभी न भूल जाना।" सिद्धजी ने उन्हें आश्वासित किया; उस क्षण वहाँ अनिवार प्रेमसागर उमड़ पड़ा। स्वामीजी ने सिद्धजी के सिर पर हाथ रखकर "आप का ज्ञान अखंड रहे," ऐसा आशिर्वाद दिया; सिद्धजी ने उन्हें प्रणाम किया। स्वामीजी का सिद्धजी के प्रति स्नेह देखकर सभी भक्तगण गद्‌गद्‌ हो उठे; उसके पश्चात दोनों की आरती उतारकर भक्तगण निकल पड़े। भक्तों के साथ हुबली जाने वाले सिद्धजी को विदा करने के लिए मडिवाल स्वामीजी दूर तक गए। उसपर सिद्धजी ने स्वामीजी के चरण पकड़कर बिनती करके उन्हें वापस भेजा और स्वामीजी के शिष्य उनका हाथ पकड़कर उन्हें मठ ले गए। वापस मठ लौटने के पश्चात, बारबार आँसू बहाते हुए स्वामीजी, सिद्धजी के गुणों का बयान शिष्यों के सामने कर रहे थे। जिस प्रकार राजा दशरथ राम को वनवास भेजने के पश्चात उसके गुणों को याद करके रो रहा था, मडिवाल स्वामीजी की स्थिति भी इस प्रकार की हुई थी। उसके कुछ दिनों के पश्चात स्वामीजी ने देहत्याग किया; मोक्षप्राप्ति होने के कारण वे विदेही तथा कैवल्य स्थिति में रहे। उनके भक्तगणों ने उनकी भव्य समाधि गरग गाँव में बनायी। ऐसी यह महात्माओं की जीवनी सुनने से कलियुग के पाप नष्ट होते हैं; अंत:करण शुद्ध होकर ज्ञान प्राप्ति का अधिकार मिलता है। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह तैंतीसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥